IF : 4.547 | IC Value 80.26

Volume-6, Issue-3, March - 2017 • ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

PUBLIC ADMINISTRAION

सामाजिक मूल्यों एवं नैतिकता का महत्तव भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के संदर्भ में |

VIDUSHI SHARMA SINGHANIA UNIVERSITY PACHARI BADI JHUNJHUNU, RAJASTHAN

ABSTRACT

इस शोध पत्र के द्वारा आजकल के वातावरण के प्रति चिंता व्यक्त की गई है क्योंकि आजकल की युवा पीढ़ी एवं भावी पीढ़ी में लगातार सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है |इस शोध पत्र के द्वारा प्रत्येक बुद्धिजीवी को समाज के प्रति अपनी भूमिका की ओर सचेत करने का प्रयास किया गया है क्योंकि प्रत्येक नागरिक के सहयोग के द्वारा ही इस सुसंस्कृत ,सुदृढ़ ,अन्नत ,अविरल ,अमूल्य धरोहर -भारतीय संस्कृति का संवर्धन एवं रक्षण संभव है | भारतीय संस्कृति में ऐसे तत्व व ऐसे गुण विद्यमान है कि वह संपूर्ण संसार को ही अपना परिवार मानती है तथा सम्पूर्ण विश्व में शांति और भाईचारे की प्रार्थना को महत्व देती है | हमारी संस्कृति में "वसुधेव कुटुम्बकम" और "सर्वे भवन्तु सुखिन:" की बात कही गई है जो किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंग आदि के बंधन को स्वीकार नहीं करती | धन्य है ऐसी धरती जहाँ इतनी सुंदर विचारधारा का प्राकट्य एवं पालन, पोषण हुआ है | मै क्षद्धा से नमन करती हूँ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को ,भारत भूमि ,

हमारी मातृभूमि को जिसने हम सब को इतने अच्छे संस्कार प्रदान किए है |

KEYWORDS : सुसंस्कृत, सुदृढ़, अन्नत, अविरल, संवर्धन, प्राकट्य, संप्रदाय, सानिध्य |

INTRODUCTION

आज हम जिस दौर से गुज़र रहे है वहाँ पर प्रत्येक शिक्षित बुद्धिजीवी अवश्य इस चिंता से ग्रसित होगा कि हमारा समाज, हमारी युवा पीढ़ी किस ओर जा रही है ? पश्चिमी सभ्यता का इतना अंधानुकरण किया जा रहा है कि आजकल की पीढ़ी अपनी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल्यों , उसकी विशेषताओं से बिलकुल ही अनभिज्ञ होती जा रही है। इन सबके पीछे कहीं न कहीं हमारा भी हाथ है। क्योंकि हम सदैव विदेशी चीजों को, विदेशी नीतियों, विदेशी कपड़ों, विदेशी रीति-रिवाजों, विदेशी संस्कृति को ही श्रेष्ठ मानते हैं एवं अपनी भावी पीढ़ी को उन्हीं के बारे में शिक्षा प्रदान करते हैं। उन्हीं का प्रचार-प्रसार बढ़-चढ़ कर करते हैं क्योंकि इन सबका ही चलन अत्यधिक हो रहा है तो हम भी इस धारा के साथ बहते जा रहे है । जबकि हमें ये चाहिए कि हम अपनी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल्यों को पहचाने। उनका पोषण करें, उनका रक्षण करें, उनका प्रचार-प्रसार करें। इसके विपरीत हम अपनी ही धरोहर से दूर होते जा रहे हैं। इन सबके पीछे कुछ प्रमुख कारण जो मुझे लगता है वो ये हैं -

१. संयुक्त परिवार का ह्रास

आजकल एकल परिवारों का चलन है | उसमें भी माता - पिता दोनों ही काम पर चले जाते हैं, तथा बच्चे दूसरों के सहारे पलते हैं, जिसके कारण जो संस्कार उन्हें दादी -नानी आदि द्वारा मिलने चाहिए वो खत्म होते जा रहे हैं। बच्चे की प्रथम पाठशाला उसकी "माँ" होती है। परंतु आजकल की माँ के पास इतना समय नहीं हो पाता एवं घर में बुजुर्ग न होने से बच्चों का बचपन अधूरा ही होता रहा है।

२. शिक्षाप्रद, प्रेरणास्पद कहानियों का अंत

इतिहास गवाह है कि जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके जीवन में बचपन में सुनी हुई शिक्षाप्रद, प्रेरणास्पद कहानियों की अमिट छाप थी जिन्होनें उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को बदलकर रख दिया। परंतु आजकल के वातावरण में से इन सभी का लगभग अंत हो चुका है।

३. सामाजिक वातावरण का सीमित दायरा

पहले ये सामाजिक दायरा बहुत बड़ा होता था। बच्चे प्रकृतिक वातावरण में अधिक समय बिताते थे | उनके पास खेलेने वाले बहुत खेल थे जो उनकी शारीरिक क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ उन्हें परोक्ष रूप से ही सामाजिक सामंजस्य (Social Adjustment), त्याग, सहनशीलता, परस्पर प्रेम, भाईचारे की भावनाओं का विकास करते थे | परंतु आजकल के बच्चों के पास सामाजिक वातावरण के नाम पर अपना अलग कमरा तथा अपने खिलौने और अपने मोबाइल फोन ही उसके साथी रह गए हैं। प्रकृतिक सानिध्य, सामीप्य का तो मौका ही नहीं है। इसलिए बच्चे समाज से कटे हुए से लगते हैं। सामाजिक वातावरण से उनका वास्ता (Interaction) ही नहीं हो पाता। इसलिए सामाजिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार नहीं हो पाता।

४. प्लेवे स्कूलों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की कमी

पहले तो प्लेवे स्कूलों का अस्तित्व ही नहीं होता था। आज बच्चों कों बहुत जल्दी ही प्लेस्कूल में डाल दिया जाता है जहाँ पर उनकी स्कूली शिक्षा से संबन्धित पाठ्यक्रम बनाया जाता है। सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा ना के बराबर ही होती है।

५. विद्यालयी पाठ्यक्रमों में भी सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों संबंधी अध्ययन न के बराबर

विद्यालयी पाठ्यक्रमों में भी भारत में संस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रमों में न के बराबर स्थान दिया गया है। अमेरिका में क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research) की शुरुआत हुई थी। इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य शिक्षण संस्थाओं की व्यावहारिक समस्याओं का हल खोजना है। वी॰वी॰ कामत ने अपने लेख Can a Teacher do Research Teaching ? में १९७५ में भारत में अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख किया है जैसे विभिन्न आयुवर्ग के बच्चे, बच्चों की ऐच्छिक क्रियाएँ, विभिन्न आयुवर्ग के शब्द भंडार आदि। यह क्रियात्मक अनुसंधान का एक प्रकार है जिसके द्वारा विद्यालयी पाठ्यक्रमों में सुधार, बच्चों की इच्छा एवं आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है।

६. बढ़ती हुई संचार व्यवस्था

आज दुनिया सिर्फ एक क्लिक (click) की दूरी पर है। जहाँ इस सुविधा के अनेक सकारात्मक पहलू हैं वहाँ इसकी नकारात्मकता को नकारा नहीं जा सकता। और मानव स्वभाव ये है कि वो गलत चीजों की

तरफ ज्यादा आकृष्ट होता है। इसी के साथ हम ये भी कह सकते हैं कि इन साधनों की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता भी सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास मुख्य का कारण है।

७. मनोरंजन के अत्याधुनिक साधन

आजकल की युवा पीढ़ी मनोरंजन के लिए केवल स्वयं तक ही संबन्धित रह गयी है या यूं कहें कि रहना पड़ रहा है। पहले जहाँ व्यक्ति समूह में, (संयुक्त) परिवार में मनोरंजन करता था, वहाँ आज ये दायरा केवल स्वयं तक ही सिमटकर रह गया है। और उसपर इतने आधुनिक साधन कि जो मनुष्य की बुद्धि को, उसकी सोच को, उसके विचारों आदि को नकरातमक्ता की ओर अधिक धकेलती है। इस कारण भी सामाजिकता, नैतिकता का विकास प्रभावित होता है।

८. खान-पान का अहम भूमिका

आजकल की पीढ़ी अत्यधिक फास्ट फूड Fast-Food खाने लगी है, मांसाहारी बनने लगी है जिसके कारण उनमें दया, करुणा, प्रेम, सहानुभूति, मानवता आदि गुणों का ह्रास होता जा रहा है। पहले के लोग घर का बना शुद्ध शाकाहारी भोजन करते थे तो उनके विचारों में भी सात्विक्ता होती थी। और कहा भी है - "जैसा खाओगे अन्न, वैसा बनेगा मन"। इसलिए तामसिक भोजन खा कर ये लोग भी तामसिक प्रवृत्ति के बन गए हैं जिससे मानवीय गुणों की कमी होती जा रही है।

९. बदलती हुई दिनचर्या

आजकल जिसे देखो वही भाग रहा है। किसी के पास समय नहीं है। हर कोई एक अजीब सी होड़ में, जल्दी में नज़र आ रहा है क्योंकि सभी को सब कुछ बहुत जल्दी पा लेना है । ठहराव Stability की हर जगह कमी है क्योंकि हमने अपनी दिनचर्या ही ऐसी बना ली है। हर कोई एक मशीनी जीवन जी रहा है। किसी के पास ठहरकर किसी की कोई अच्छी बात सुनने का, किसी का दुख सुनने का, किसी की मदद करने तक का भी समय नही है। सब अपने तक ही सीमित हैं। इसी व्यस्तता भरी दिनचर्या के कारण हमारे सामाजिक एवं नैतिक मूल्य अस्तित्वहीन होने की कगार पर खड़े है।

१०. पश्चिमी सभ्यता का अत्यधिक प्रचार-प्रसार

सबसे अधिक प्रभावशाली कारण है पश्चिमी सभ्यता का भारत में अत्याधिक प्रचार-प्रसार। हमने उनके पहनावे को, उनके त्योहारों को, उनकी मान्यताओं को हद से अधिक आत्मसात कर लिया है और आगे भी और अधिक आत्मसात करने के आसार नज़र आ रहे हैं। इन सब के कारण हमारे अपने त्योहार, धार्मिक रीति-रिवाज कहीं पीछे छूट गए हैं जो हमारी हिंदुस्तान की जान थे, हमारे भारत की पहचान थे। इन सब उपरोक्त कारणों से ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में विराम चिन्ह लग गया है।

निष्कर्ष Conclusion

इन सब बातों से ये निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, सब संस्कृतियों की जननी है। जितना धनी हमारा भारतीय साहित्य है, उतना दुनियां के किसी भी देश का हो ही नहीं सकता। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व हमारे यहाँ हर विषय पर ग्रंथ लिखे जा चुके थे, प्रयोगशालाएँ थी, वेधशालाएँ थी, शल्यक्रियाएँ (Operations) की जाती थी, विश्वविद्यालय थे (तक्षाशिला, नालंदा) विमान संहिता थी। यानि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति अपने हर क्षेत्र में भरपूर रही है। इसलिए इस दिशा में सार्थक कार्य करना प्रत्येक भारतवासी का पावन कर्तव्य बन जाता है ताकि पुन: भारतवर्ष 'जगद्गुरू' का स्थान ग्रहण कर सके। यह क्षण प्रत्येक भारतीय के लिए गौरवशाली होगा।

विचारधाराएँ-

स्वामी विवेकानंद, अवधेशानंदगिरी, ब्रह्म कुमारीज़, प्रसून जोशी, संजय कुन्दन, प्रीतंभरा जोशी, निर्मल जैन, सीताराम गुप्ता, ओशो।

ग्रंथानुक्रमणिका (References)

1. फाड़िया, बी एल, के एल "उच्चतर लोक प्रशासन" (२००२, साहित्य भवन)
2. शर्मा एंड अग्रवाल "प्रशासनिक विचारक" (२००१ - रमेश प्रकाशन)
3. भांभरी.सी.पी॰ "लोक प्रशासन "सिद्धांत एवं व्यवहार" (१९९५ - जयप्रकाश प्रकाशन)
4. शर्मा महादेव "लोक प्रशासन-सिद्धान्त एवं व्यवहार" (१९९० - जयप्रकाश प्रकाशन)
5. शर्मा.पी.डी.एच, सी॰ "लोक प्रशासन - सिद्धांत एवं व्यवहार" (१९९५- जयप्रकाश प्रकाशन)
6. अवस्थी एवं अवस्थी "प्रशासनिक सिद्धान्त" (१९८९ - पूजा प्रकाशन)
7. नाथराय पारस "अनुसंधान परिचय" (२००४ - लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन)
८. सिंह साहिब , सिंह सविन्दर "लोक पदाधिकारी तथा वित्तीय प्रशासन" (२००१ - न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कंपनी)
९. मेहता डी॰ डी॰ "माध्यमिक शिक्षा एवं स्कूल प्रबन्ध" (२००७ - लक्ष्मी बुक डिपो)
१०. मेहता डी॰ डी॰ "शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान" (२००७ - लक्ष्मी बुक डिपो)
११. अग्रवाल मनोज श्रीवास्तव कुलदीप "यू. जी. सी. नेट" (२०१२ - अरिहंत पब्लिकेशन्स)
12. Bhattavharya.S "Management effectiveness" (Oxford & IBH Publishing House, Delhi)
13. Frederickson George "Ethics and Public Administration" (M.E Sharpe, New York)
14. शर्मा के अरविंद, शर्मा इन्दु "जनसेवा प्रेरित नोकरशाही-भारत में नागरिक आधिकार-पत्र" (भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली)
१५. अर्थशास्त्र कौटिल्य मैसूर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग हाउस, मैसूर
१६. Justice Reddy P.Jagamohan "Law & Society" (Ajanta Publications, Delhi)
17. Sen Raj Kumar "Social Sector Development in India" (Deep & Deep Publications Pvt.Ltd. New Delhi)
१८. वी.वी॰ कामत